यशपाल की कहानियों में व्यक्त सांस्कृतिक चेतना

सत्य प्रकाश तिवारी✉

हिन्दी विभाग, शिवपुर दीनबंधु इंस्टीट्यूशन (कॉलेज), शिवपुर, हावड़ा – ७१११०२

E-mail – satyanbsm@gmail.com

यशपाल के व्यक्तित्व के निर्माण में क्रांतिकारी धारा की महत्वपूर्ण भूमिका थी। जिस रचनाकार की प्रतिबद्धता क्रांति के प्रति होती है वह स्वभाव से विद्रोही होता है । यशपाल की सांस्कृतिक चेतना पर इसी विद्रोही भावना का प्रभाव था । " यशपाल के साहित्य में शुरू से अंत तक विद्रोह के स्वर मुखर हुए हैं । समाज की घिसी – पिटी रूढ़ियों से विद्रोह , धार्मिक कर्मकांडों से विद्रोह , पुनर्जन्म –परजन्म, मोक्ष आदि के अंधविश्वासों से विद्रोह ,साहित्य कलाओं की जड़ अवधारणाओं से विद्रोह , स्त्रियों के संबंध में पुराणपंथी विश्वासों के खिलाफ विद्रोह और राजनीति की यथास्थिति तथा पिटे-पिटाए तौर-तरीकों से विद्रोह । "1 अपने इसी विद्रोही तेवर के कारण यशपाल अपने समय के अन्य रचनाकारों से अलग दिखते हैं। इन्होंने अपने जीवन में जो देखा समझा उसी के आधार पर इनकी दृष्टि निर्मित हुई ।

गुरुकुल में इन्हें जो शिक्षा मिली उसका मूल तत्व यह था कि संसार में सम्पूर्ण ज्ञान का मूल केवल वेद है। वैदिक सभ्यता के कारण यशपाल ने जिस सामाजिकता को अपने आसपास महसूस किया उससे उनके मन में उस सामाजिकता के विरुद्ध विद्रोहात्मक भाव जागृत हुआ। डॉ सदाशिव द्विवेदी का यह कथन यहाँ प्रासंगिक जान पड़ता है –" उन्होंने (यशपाल) ने देखा कि संस्कारों से बंधा आदमी किस तरह साम्राज्यवादी अत्याचार सह रहा है , धार्मिक रूढ़ियों से घिरा व्यक्ति किस तरह कुत्सित समाज की पीड़ा का भोग कर रहा है । भौतिकवाद और मार्क्सवाद के प्रति प्रेम ने यशपाल को इन समस्याओं का वास्तविक कारण ढूँढने में मदद की और वे सामाजिक आदर्शों या सुधारों की यूटोपिया में नहीं बंधे। उनका वह दर्शन था जिसने सिखाया कि धर्म अफीम है , अंधविश्वासों के मूल में आर्थिक विपन्नता का दायित्व है, संस्कारों की बोझ का आधार आभिजात्य और पूंजीवादी नियंत्रण है।"2 यशपाल इन तमाम सच्चाइयों से वाकिफ थे ,यही कारण है कि इन्होंने उन पात्रों को अपनी कहानियों का आधार बनाया जो अंधविश्वासों एवं रूढ़िगत मान्यताओं के शिकार थे । इस संदर्भ में 'मनु कि लगाम' , 'विश्वास कि बात', 'हिंसा', 'परलोक', 'मजहब', 'तूफान का दैत्य', 'डायन', 'जादू के चावल', 'शंबूक', 'देवी का वरदान', 'भगवान के पिता का दर्शन', 'खच्चर और आदमी', तथा 'ओ भैरवी' इत्यादि कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं ।

यशपाल की दृष्टि हिन्दी साहित्य को उसकी प्रादेशिक सीमाओं और संकीर्णताओं से बाहर लाने में सजग रही है। अपने प्रगतिशील विचारों के कारण इन्होंने हिन्दी साहित्य को एक नई दिशा भी दी । इन्होंने अपने साहित्य के लिए ऐसे विषयों को चुना जो सनातनी हिन्दू संस्कृति के गढ़ उत्तर प्रदेश में वर्जित माने जाते थे। धार्मिक अंधविश्वास , पुराणपंथी मान्यताएँ , सामंती मूल्य , सीता –सावित्री के आदर्शों के तले पिसती औरत ,धर्म कि आड़ में छिपी सांप्रदायिकता , कर्मकांडों में व्यक्त पाखंड , परलोक का मार्ग प्रशस्त करने के नाम पर तीर्थ स्थलों के अमानवीय कृत्य जैसे विषय इन्होंने अपनी कहानियों के लिए चुना जो साहित्य के मठाधीशों के लिए सुपाच्य नहीं था ।

इनकी दृष्टि समाज एवं राष्ट्र में व्याप्त असंतोष , अकर्मण्यता , अनैतिकता एवं अराजकता पर भी गई है। इनकी दृष्टि परलोक की अपेक्षा इहलोक पर केन्द्रित रही । इनकी धारणा थी कि संसार ही सत्य है, जीवन ही सत्य है, जो

कुछ पाना है इसी जीवन में पाना है । वे यह मानते थे कि अप्रत्यक्ष के लिए प्रकट जीवन को न्यौछावर कर देना बुद्धिमानी नहीं । यशपाल पूर्णतः आधुनिक थे । इसी जीवन में 'खाओ ,पीयो और प्रसन्न रहो' के सिद्धांत में वे आस्था रखते थे ।

वैसे तो यशपाल की दृष्टि हर प्रकार के मानवीय शोषण पर गयी है परंतु स्त्री के शोषण पर इन्होंने सबसे अधिक लिखा । शोषितों की कतार में स्त्री उनकी संवेदना शायद इसलिए ज्यादा पा सकी है कि दूसरों की तुलना में स्त्री होने के नाते वह उस हवस की शिकार , उस भोग की वस्तु भी बनती रही है जिसका सीधा संबंध पुरुष की कामवृत्ति से है । स्त्री के शोषण का रूप उजागर करते हुए यशपाल ने स्त्री संबंधी सामंतवादी – पूंजीवादी मानसिकता पर जमकर प्रहार किया है। स्त्री की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति से लाभ उठाकर उसकी विवशता का सौदा करनेवालों पर भी इन्होंने बड़ी निर्ममता से प्रहार किया है। स्त्री के प्रेम और विवाह संबंधी प्रश्नों पर भी इनकी दृष्टि गई है। इस संबंध में कुछ आलोचकों ने इन पर यौन प्रसंगों के अनावश्यक चित्रण का आरोप भी लगाया है। यशपाल पर उठे इस विवाद के संबंध में डॉ शिव कुमार मिश्र ने लिखा है – "विवाद उन्हीं को लेकर उठते हैं जो लीक से हटकर चलते हैं , नए रास्ते तलाशते हैं । यशपाल लीक से हटकर चले हैं , नए रास्तों पर गए हैं फलतः विवादों में घिरे हैं। बावजूद इसके यशपाल अपनी बड़ी हैसियत के साथ ही कथा के मंच पर रहे । दृष्टि और दृष्टिकोणगत सीमाएं उनमें हैं परंतु वे उनकी पहचान का बुनियादी आधार नहीं हैं । बुनियादी रूप में वे अहम मानवीय सरोकारों के , जनपक्षधरता के संजीदा रचनाकार हैं । अपने गंतव्य के प्रति वे पूरी तरह निष्ठावान रहें हैं ।"3 अनमेल विवाह के दुष्परिणामों को भी इन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से रेखांकित किया है। इस संदर्भ में 'पुरुष भगवान' , 'पहाड़ का छल' जैसी कहानियाँ महत्वपूर्ण हैं ।

यशपाल अपने समय की राजनीतिक विषमताओं , आर्थिक वैषम्यों , सांस्कृतिक विसंगतिपूर्ण स्थितियों , घटनाओं चरित्रों के प्रति जागरूक थे । समाज को बदलने की चाहत के साथ इन्होंने जिन तीखे व्यंग्यवाणों की सर्जना की , वे सामाजिक – आर्थिक , संस्कृतिक अंतर्विरोधों की बखिया उधेड़ कर रख देते हैं । 'वो दुनिया' कहानी में वे लिखते हैं –"मनुष्य को आत्मनिर्णय का अवसर और अधिकार है , परंतु ऐसा कर सक्ने के लिए समाज के रक्त को मुनाफा बनाकर चूस लेने वाले कीड़ों को दूर करना होगा।"4 'नई दुनिया' कहानी इस संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है जिसमें यह रेखांकित किया गया है कि किस प्रकार मशीनों के आ जाने से मजदूरों कि छटनी होती है , उनकी मांगे अस्वीकृत कि जाती हैं और मजदूरों के हकों के लिए लड़ने वाले व्यक्ति कि क्या स्थिति होती है। यशपाल की कहानियों पर यदि समग्रता में विचार करें तो देखेंगे कि उन्होंने अपनी कहानियों का प्लॉट चुनने में अनेक जीवन – स्थितियों को चुना है। आजादी के पूर्व की सामाजिक विसंगतियों और उसके बाद कि चालाकियों की इन्होंने बारीक पड़ताल की है।

पूंजीवादी मूल्यों के अंतर्विरोधों को भी इन्होंने बखूबी रेखांकित किया है। किसी भी पूंजीवादी समाज में पूंजीवादी सत्ता मजदूर वर्ग और आम जनता को भौतिक और मानसिक दोनों प्रकार से शोषित करना चाहती है। पूंजीवाद अपनी शर्तों पर समाज को चलाना चाहता है। उसे केवल अपने मकसद को कामयाब करने से ही मतलब रहता है। उसे इससे कुछ भी फर्क नहीं पड़ता कि समाज पर उसका क्या प्रभाव पड़ेगा। यही कार्न है कि पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत उच्च से उच्चतर संस्कृतियाँ भी उपेक्षित होने लगती हैं। पूंजीवादी व्यवस्था बाजरीकरण की प्रक्रिया का समर्थन करती है। पूरी दुनिया इसके लिए बाजार है । यशपाल पूंजीवादी व्यवस्था के घोर विरोधी थे क्योंकि वे इस व्यवस्था के दुष्परिणामों से वे भलीभाँति परिचित थे। अपनी 'वो दुनिया' कहानी के माध्यम से इन्होंने

यह स्पष्ट किया है कि धन किस प्रकार कभी –कभी मानवीय मूल्यों को नष्ट करने का भी कारण बनता है। वे लिखते हैं – " समाज का रक्त रुपए का रूप धर सब काम चलाता है । समाज के शरीर में पड़ गए यह कीड़े मुनाफे खाते हैं, समाज के रक्त को मुनाफे के रूप में अपनी तोंद में भरते चले जाते हैं और समाज का शरीर रक्तहीन होकर निश्चेष्ट हो जाता है। बेरोजगारी और बेकारी से समाज के अंग हिल नहीं पाते । अंगों के हिल न पाने से शरीर बेजान हुआ जा रहा है। शरीर के मुनाफाखोर कीड़े रक्त को समेट रहे हैं । मुनाफाखोरी को न्याय समझने का सबसे विकट उदाहरण हमने देखा 1943 में बंगाल के अकाल में । समाज और बाजार में अन्न रहते , तीस लाख आदमी अन्न का बढ़ा दिया गया मूल्य न दे सकने के कारण मर गये। अन्न के बिना मरनेवाले इन लोगों कि लाशों पर मुनाफाखोरों ने प्रति मुर्दा दस हजार रुपया कमाया, यह सरकारी आकड़े बता रहे हैं। यदि समाज को जीवित रखना है तो उसे इन कीड़ों से मुक्ति दिलानी होगी।"5 यशपाल के तत्कालीन समय का यह संकट आज और भी तीव्र हो गया है। यशपाल हिन्दी के ऐसे कहानीकार थे जो पूंजीवादी व्यवस्था के तानाशाहीपूर्ण रवैये से दुखी थे। इस कहानी के अंतिम अनुच्छेद में वे लिखते हैं –" मैं स्वयं इस दुनिया से असंतुष्ट हूँ , जिसमें मनुष्य को आत्मनिर्णय का अवसर और अधिकार हो , परंतु ऐसा कर सकने के लिए समाज के रक्त को मुनाफा बनाकर चूस लेनेवाले कीड़ों को दूर करना ही होगा । यह कीड़े समाज के शरीर को टाइफाइड , तपेदिक , कोढ़ ,पूंजीवाद या तानाशाही से ग्रस्त किए हैं , परंतु व्यक्तिगत रूप से मुक्ति चाहनेवाले लोग , मेरे उस दुनिया के स्वप्न को हिंसा बताकर उसका विरोध करते हैं । उनकी दृष्टि में उनका स्वार्थ ही सबसे बड़ा समाज –हित और न्याय है।"6

यशपाल एक ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने समाज की गलित , दलित एवं दूषित अवस्था को अत्यंत निकट से देखा है। यही कारण है कि इनकी सांस्कृतिक चेतना के निर्माण में मानवीय मूल्यों एवं संवेदना के संरक्षण की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ :

1. कपूर मस्तराम , हिन्दी क्षेत्र की संकीर्णता और यशपाल , संकलित – इंद्रप्रस्थ भारती , संपादक – प्रदीप पंत, अंक 4, हिन्दी अकादमी, दिल्ली, पृ° 106
2. द्विवेदी सदाशिव , यशपाल की कहानियाँ : पुनर्मूल्यांकन की कोशिश , संकलित – क्रांतिकारी यशपाल, संपादक – मधुरेश , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण 1979 , पृ° 178-179
3. मिश्र शिवकुमार , यशपाल : विवादों के दायरे में और विवादों से परे , संकलित – वर्तमान साहित्य, संपादक – कुंवरपाल सिंह , अंक 10-12 , शिल्पायन , दिल्ली , पृ° 157
4. यशपाल , यशपाल की सम्पूर्ण कहानियाँ खंड 1 , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण 1993, पृ° 199
5. यशपाल , यशपाल की सम्पूर्ण कहानियाँ खंड 1 , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण 1993, पृ° 198
6. यशपाल , यशपाल की सम्पूर्ण कहानियाँ खंड 1 , लोकभारती प्रकाशन , इलाहाबाद , संस्करण 1993, पृ° 200